ISSN 0975-735X
UGC Approved
Impact Factor 3.471

संपादक
डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
डॉ. मीना अग्रवाल

शोध दिशा

44

शोध दिशा 44

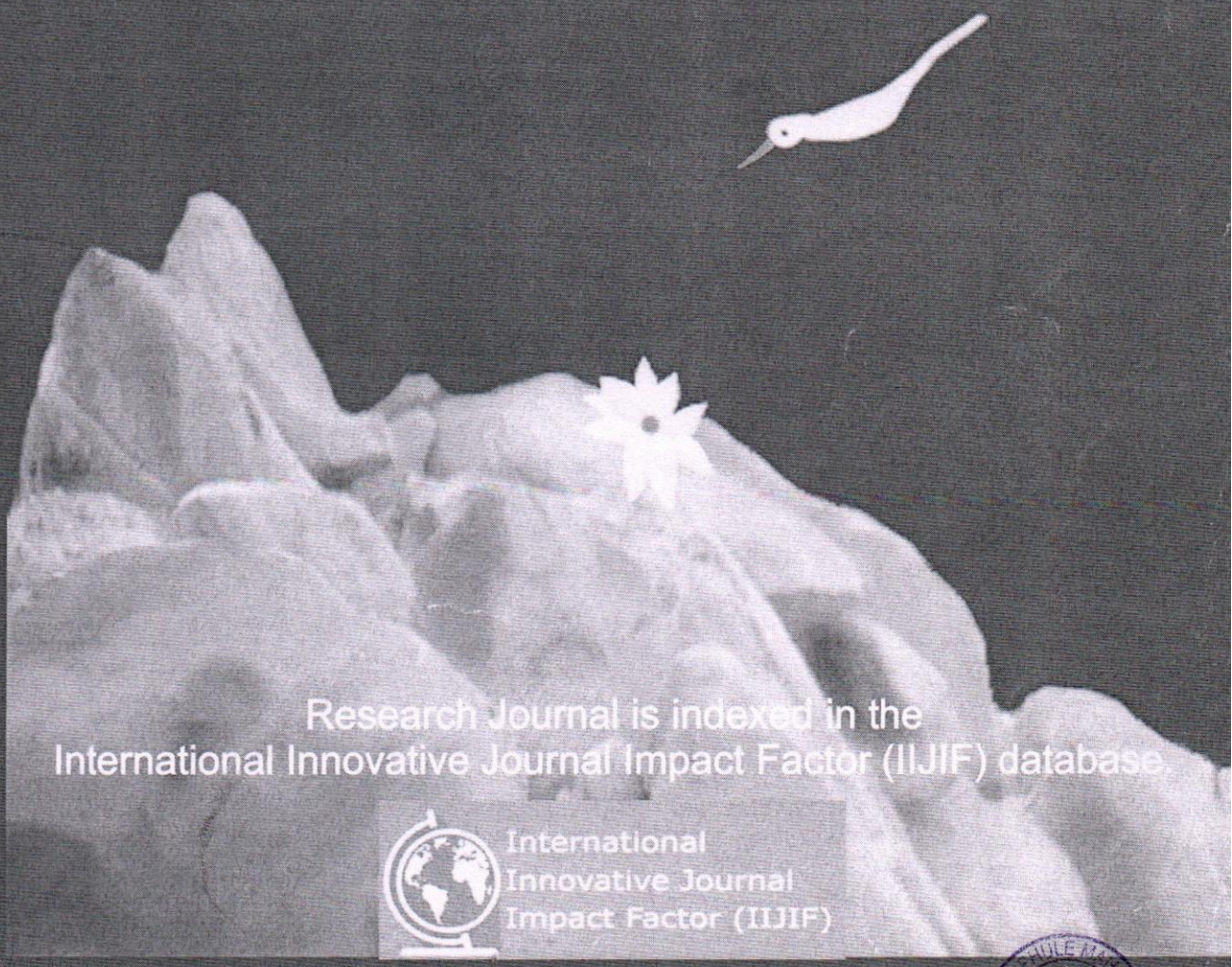

Research Journal is indexed in the
International Innovative Journal Impact Factor (IIJIF) database.

International
Innovative Journal
Impact Factor (IIJIF)

MAHATMA PHULE MAHAVIDYALAYA • PIMPRI, PUNE-17

शोध दिशा

ISSN 0975-735X

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका : केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से अनुदान प्राप्त
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त पत्रिका (41387)

शोध अंक 44 | मार्च 2019 | 200.00 रुपए

संपादकीय कार्यालय
हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार,
बिजनौर 246701 (उ॰प्र॰)
फोन : 01342-263232, 07838090732
ई-मेल : shodhdisha@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय

हरियाणा
डॉ॰ मीना अग्रवाल
बी-203, पार्क व्यू सिटी-2 सोहना रोड,
गुड़गाँव (हरियाणा)
फोन : 0124-4076565, 07838090237

दिल्ली एन॰सी॰आर॰
डॉ॰ अनुभूति
सी-106, शिवकला अपार्टमेंट्स
बी 9/11, सेक्टर 62, नोएडा
फोन : 09958070700

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

प्रबंध संपादक
डॉ॰ मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
डॉ॰ शंकर क्षेम

उपसंपादक
डॉ॰ रश्मि त्रिवेदी

कला संपादक
गीतिका गोयल/ डॉ॰ अनुभूति

उपसंपादक
डॉ॰ अशोककुमार 09557746346

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी॰ए॰

शुल्क
आजीवन (दस वर्ष): व्यक्तिगत : पाँच हजार रुपए
संस्थागत : छह हजार रुपए
वार्षिक शुल्क : छह सौ रुपए
यह प्रति : तीन सौ रुपए

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें। (सन् 1989 से प्रकाशन-क्षेत्र में सक्रिय)

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ॰प्र॰) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

63

अनुक्रम

साहित्य का सिनेमा बनाम सिनेमा का साहित्य/ **डॉ॰ अर्जुन चव्हाण** 15

राधाचरण गोस्वामी के उपन्यास : समाजोपयोगी मनवांछित मनोरंजन/ **डॉ॰ अशोक उपाध्याय** 25

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी की काव्य-भाषा/ **डॉ॰ सत्यप्रकाश त्रिपाठी** 33

हिंदी-कविता में भारतीय संस्कृति का प्रभाव/ **डॉ॰ मृदुल जोशी** 37

सांप्रदायिक सद्भावना और कबीर/ **डॉ॰ बेवले ए॰जे॰** 43

असहमति की भाषा और दलित कहानी/ **डॉ॰ नितिन गायकवाड** 48

हर नया मौसम नई संभावना ले आएगा/ **डॉ॰ मधुकर खराटे** 59

हिंदी आत्मकथा साहित्य का उद्भव एवं विकास/ **डॉ॰ राकेश रंजन** 66

कुसुम अंसल : व्यक्तित्व से साहित्यकार की यात्रा/ **डॉ॰ गुरमीत कौर** 72

प्रेमचंद के कथासाहित्य में सूक्तियों, लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग/ **सुरेंद्र बिसेन, डॉ॰ गणेशलाल जैन** 87

कथाकार विष्णु प्रभाकर के उपन्यासों में वैयक्तिक एवं पारिवारिक संदर्भ/ **कु॰ आफरीन, डॉ॰ महेश 'दिवाकर'** 92

नासिरा शर्मा के कथासाहित्य में मुस्लिम स्त्री-विमर्श/ **डॉ॰ शेख अफरोज फातेमा** 105

रसखान के काव्य में भक्तिपूर्ण प्रेम का स्वरूप/ **डॉ॰ अमितेश बोकन** 113

रघुवीर सहाय की कविताओं में जीवन-संघर्ष/ **अनीतारानी** 120

अकथ कहानी संघर्ष की/ **डॉ॰ वैशाली खेडकर** 124

आशापूर्णा देवी के उपन्यासों में मानवीय संबंधों की गरिमा/ **डॉ॰ कोयल विश्वास** 132

डॉ॰ श्यामसुंदर दुबे के ललित निबंधों में ग्रामीण संस्कृति का बदलता स्वरूप/ **मनप्रीत सिंह** 136

समकालीन हिंदी-कविता में सामाजिक सरोकार/ **डॉ॰ मुकेशकुमार** 140

स्व॰ अटलबिहारी वाजपेयी के काव्य में संवेदना के विविध स्वर/ **नीरू मोहन, डॉ॰ महेश 'दिवाकर'** 147

आदिवासी लोकगीतों की परंपरा/ **डॉ॰ राजेंद्र सोमा घोडे** 157

महाकवि अनुराग गौतम महाकाव्य के 'चाँदनी' में चिंतन के विविध स्वर/ **ऋतु, डॉ॰ महेश 'दिवाकर'** 165

प्रगतिशील कथासाहित्य और अमरकांत/ **सत्येंद्र सिंह** 171

आधुनिक हिंदीकथा-जगत में कमलेश्वर का स्थान/ **डॉ॰ सुधारानी सिंह** 175

ज्ञानमार्ग के प्रभाव में मार्ग से भटक गए कबीर/ **नीरजकुमार मिश्र** 182

डॉ॰ महेन्द्र सागर प्रचण्डिया के दोहे/ **डॉ॰ कनुप्रिया प्रचण्डिया** 192

ISSN 0975-735X

MAHATMA PHULE MAHAVIDYALAYA PIMPRI, PUNE-17

अकथ कहानी संघर्ष की

डॉ॰ वैशाली खेडकर
सावित्रीबाई फुले महिला महाविद्यालय, सातारा

'सर्वोच्च न्यायालय के इस ऐतिहासिक फैसले से समाज में हमारी दशा पर कोई खास फर्क नहीं पड़ा। उनका हमारे साथ व्यवहार नहीं बदला है, क्योंकि सोच एक दिन या एक साल में नहीं बदलती। जरूरत है लोगों के नजरिए को बदलने की।'[1]–रंजीता सिन्हा

वर्तमान युग स्वतंत्र अस्तित्व एवं अस्मिता की पहचान का है। आज हर कोई व्यक्तिगत या सामूहिक अस्मिता के लिए संघर्षरत है। धर्म, जाति एवं वर्ण श्रेष्ठत्व की लड़ाई भी जारी है, किंतु एक वर्ग ऐसा भी है, जो अपनी अस्मिता के लिए नहीं बल्कि 'मनुष्य' रूप में पहचान पाने के लिए संघर्षरत है और वह है किन्नर समाज। अप्रैल, 2014 के सर्वोच्च न्यायपालिका के ऐतिहासिक फैसले ने किन्नर समुदाय के अस्तित्व को स्वीकारा, किंतु उनकी तरफ देखने के समाज के नजरिए में कोई बदलाव नहीं आया है। यही कारण है कि किन्नर समाज आज भी दर-दर की ठोकरें खाने के लिए मजबूर है। रोटी, कपड़ा और मकान जैसी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए भी उन्हें संघर्ष करना पड़ता है। वैसे, मनुष्य आज अपनी बौद्धिक क्षमता एवं वैज्ञानिक प्रगति के बलबूते पर चाँद और मंगलग्रह तक का सफर कर सूरज की ओर अग्रसर हुआ है। समग्र विश्व उसके लिए ग्राम की तरह बना है। हर दिन के नए-नए आविष्कार अचरज में डाल रह है। और इसी समाज में एक समुदाय है, जो अपने पिछड़ेपन के शिकंजे में जकड़ा हुआ है। मुख्य समाज के रास्ते उसके लिए हमेशा बंद हैं। भारत में तो उनकी स्थिति अधिक दयनीय है। उन्हें मनुष्य रूप में ही स्वीकारा नहीं जाता। वैसे, भारतीय संस्कृति विश्व में महान मानी जाती है। यहाँ हर जड़ एवं चेतन में ईश्वर का अस्तित्व माना जाता है, लेकिन ईश्वर द्वारा रचित इस 'तीसरी दुनिया' को आज तक उपेक्षित ही रखा गया है। सर्वोच्च न्यायालय के फैसले ने इसी तीसरी दुनिया को हक एवं अधिकार प्रदान कर जीने की नई उर्जा प्रदान की है। कई साहित्यकारों ने इसे अपने साहित्य का विषय बनाकर सामाजिक परिवर्तन में अपनी भूमिका निभाई है। हिंदी में अब तक तीसरी ताली, यमदीप, किन्नर कथा, गुलाम मंडी, पोस्ट बॉक्स नं 203, नालासोपारा आदि उपन्यासों में किन्नर समाज के संपूर्ण जीवन को उद्घाटित किया गया है। इसी परंपरा में 'मैं पायल' उपन्यास भी एक बड़ी उपलब्धि है।

पायल सिंह के जीवन पर आधारित यह एक जीवनीपरक उपन्यास है। इसमें पायल सिंह का संपूर्ण जीवन-संघर्ष रेखांकित किया गया है। पायल सिंह एक किन्नर है। एक किन्नर को जीवित रहने के लिए कैसी जद्दो-जहद करनी पड़ती है, इसका मर्मांतक वर्णन लेखक ने किया है। यह उपन्यास लेखक महेंद्र भीष्म की साधना का भी प्रतिफल है, यही कारण है कि जहाँ अन्य उपन्यासों, कहानियों में काल्पनिक कथाओं को आधार बनाकर किन्नर समुदाय के जीवन पर

ISSN 0975-735X

MAHATMA PHULE MAHAVIDYALAYA PIMPRI PUNE-17